according to वाग्भट

वमनकल्पतरु of

वाग्भट –

Edited with commentary in Hindi by गोस्वामी रामरंग शास्त्री.

Lahore, nd.

(4)

॥ श्रीः ॥

वमनकल्पतरु

भाषाटीका सहित

जिस में

कै, यानी उलटी करने की औषधें और क्रियायें

वाग्भट्ट के अनुसार प्रकाशित हैं।

गोस्वामी रामरङ्गशास्त्री

द्वारा शुद्ध करा कर

लाला मेहरचन्द्र लक्ष्मण दास
संस्कृत पुस्तकालयाध्यक्ष
ने छपवाया ॥

पन्जाब एकानोमीकल यंत्रालय लाहौर में प्रिंटर
लाला लालमन के अधिकार से छपा।

श्रीहरिः

अथ वमन कल्प तरु प्रारम्भः ॥

वमनेमदनंश्रेष्ठं त्रिवृन्मूलं विरेचने।
नित्यमन्यस्यतुव्याधि विशेषेणविशिष्टता १

टीका-वमन में मैनफल श्रेष्ठ कहा है, और विरेचन में निसोत की जड़ श्रेष्ठ है, अन्य औषधों को निश्चय व्याधि के विशेष करके विशिष्टता है ॥ १ ॥

फलानि तानिपाण्डूनि न चातिहरितान्यपि।
आदायान्हि प्रशस्तर्क्षे मध्येग्रीष्म वसन्तयोः ॥ २

टी०-पाण्डु रूप वाले और अत्यन्त हरित रंग से रहित ऐसे मैन फलों को ग्रीष्म और वसन्त ऋतु के मध्य में श्रेष्ठ नक्षत्र वाले दिन में ग्रहण करके ॥ २ ॥

प्रमृज्यकुशमुत्तोल्यां क्षिप्त्वाबध्वाप्रलेपयेत्
गोमयेनानुमुत्तोलीं धान्यमध्येनिधापयेत् ॥ ३॥

टी०-पीछे फलों के मल आदि दोषों को दूर करके कुशा की मूटिका में धर ऊपर से बांन्ध कर उस मूटिका अर्थात् मुतोली को गोबर से लेप के अन्न के समूह में रखदे ॥ ३ ॥

मद्भूतानिमधिवष्ट गन्धानि कुशवेष्टनात्
निष्कृष्य निर्गतेऽष्टाहेशोषयेत्तान्यथातपे॥४
तेषांततःसुशुष्काणा मुद्धृय फलपिप्पलीः ।
दधिमध्वाज्ययत्नं लैर्मृदित्वा शोषयेत्पुनः ॥५

टी०-कोमलरूप और मदिरा के समान गन्धवाले कदाचित् दुष्ट गन्ध वाले ऐसे जब हो जावें तब उन फलों को उस कुशा के वेष्टन से आठ दिन के पश्चात् निकाल कर घाम में सुखावे ॥ ४ ॥ पीछे सूखजाने पर

फलों को दही शहद और घी में सुखावे।

ततः सुगुप्तं संस्थाप्यकार्य्यंकाले प्रयोजयेत्।
अथादाय ततोमात्रां जर्जरीकृत्यवासयेत् ॥६
शर्वरीं मधुयष्ठ्याद्वा कोविदारस्यवाजले।
कर्बुदारस्य बिम्ब्यावाना यस्यविडलस्यवा॥

टी०–पीछे अच्छी तरह गुप्त करके संस्थापित कर वमन के समय में प्रयुक्त करे पीछे तिन्हों में से देशकाल के अनुसार मात्रा को ग्रहण कर और चूर्ण बना॥ ६॥ मुलहटी के पानी में एक रात्रि वासित करे अथवा अमलतास के पानी करके अथवा कीकर के संग वा कडवी तोरई के संग वा कंदब के संग वा वेत के संग पानी में॥ ७॥

शणपुष्प्याः सदापुष्प्याः प्रत्यक्पुष्प्योदकेथवा।
ततः पिबेत्कषायंतं प्रातर्मृदितगालितम्॥८

सूत्रोदितेन विधिना साधुतेन तथा वमेत् ।
श्लेष्मज्वर प्रतिश्यायगुल्मांतर्विद्रधीषु च।९

टी०–अथवा घागरी औषधि के संग पानी में अथवा रुई की वाड़ी के पानी में अथवा श्वेतकंगा के पानी में भिगोवे पीछे प्रभात मे मर्दित कर छाने और उस छाने हुए कषाय को पीवे ॥ ८॥ परन्तु सूत्र स्थान मे अच्छी तरह कही हुई विधि से पीवे तिस करके अच्छी तरह वमन होता है और कफज्वर-पीनस-गुल्म-अंतर विद्रधी-इन में ॥ ९ ॥

प्रच्छर्दये द्विशेषेण यावत्पित्तस्यदर्शनम् ।
फलपिप्पलीचूर्णंवा क्वाथेनस्वेन भावितम् ॥
त्रिभाग त्रिफला चूर्णं कोविदारादिवारिणा ।
पिवेज्ज्वरारुचिष्वेवं ग्रन्थ्यापच्यर्वुदोदरी॥ ११

टी०–विशेष करके वमन को करे जब तक

पित्त का दर्शन होवे तब तक अथवा मैन फल की पीपली के काढे में भावना दिये हुए मैन-फल के बीजों के चूर्ण को ॥ १० ॥ त्रिभाग त्रि-फला के चूर्ण में संयुक्त कर और अमलतास के पानी के संग ज्वर और अरुचि में पीवे और ग्रंथि, अपची अर्बुद, पेटरोग, इन्हीं वाला मनुष्य ॥ ११ ॥

पित्तेकफस्थानगते जीमूतादि जलेन तत् ।
हृद्दाहेऽधोरक्त पित्ते च क्षीरंतत्पीलपलीशृतम् १२
क्षैरेयंवाकफच्छर्दि प्रसेकतमकेषुतु ।
दध्युत्तरंवा दधिवातत्स्तुतक्षीर सम्भवम् ॥ १३ ॥

टी०-कफ के स्थान में प्राप्त हुए पित्त में मैनफल को नागरमोथा आदि के जल के संग पीवे, और हृदय के दाह में और अधोगत रक्त पित्त में तिसी मैनफल करके पकाये हुए दूध

को॥१२॥अथवा दूध की पेया को सेवे और कफ छर्दि प्रसेक श्वास,इन्हीं में दहीकासार अथवा दही, अथवा दही में निकसानोनी घृत अथवा दूध सें निकला हुआ घी ये सब हित हैं ॥ १३

फलादिक्वाथवल्काभ्यां सिद्धंतत्सिद्धदुग्धजम्।
सर्पिः कफाभिभूतेग्नौशुष्यद्देहेच वामनम्॥१४
स्वरसंफल मज्जावा भल्लातके विधि शृतम्।
आदर्वीलेपनात्सिद्धं लीढ़ा प्रच्छर्दयेत्सुखम्॥१५

टी०–मैनफल और नागरमोथा आदि के क्वाथ और कल्क कर के सिद्ध किया अथवा मैंनफल आदि करके सिद्ध किये दूध में उपजा ऐसा कफ करके अभिभूत हुई अग्नि में और सूखते हुए शरीर में वमन रूप कहा है ॥ १४ मैनफल की मज्जा के स्वरस को भिलावे की विधि करके पकावै जब कलछा पै चिपकने

लगे तब सिद्ध जानके उतार ले पश्चात् चाटे तो इसके चाटने से सुख पूर्वक वमन होता है।

तंलेहं भक्ष्यभोज्येषु तत्कषायांश्च योजयेत्
वत्सकादि प्रतिवाय: कषाय:फलमज्जज: ॥
नीम्बार्कान्यतर: क्वाथसमायुक्तो नियच्छति।
वद्धमूलानपिव्याधीन्सर्वान्सन्तर्पणोद्भवान्।

टी०–तिस लेह को और मैनफल के क्वाथों को भक्ष्य और भोज्य पदार्थों में प्रयुक्त करे और वत्सकादि गण के औषधों के कल्क से संयुक्त किया मैनफल की मज्जा का क्वाथ ॥ १६ ॥ और नींव आंख इन्हों में एक कोई सेके क्वाथ करके युक्त हुआ मैनफल की मज्जा का क्वाथ जड़ सहित और संतर्पण में उपजी ऐसी सब व्याधियों को दूर करता है ॥ १७ ॥

राट् पुष्प फल श्लक्ष्ण चूर्णैर्माल्यं सुरूक्षितं।

वमेन्मण्डरसादीनां तृप्तोजिघ्रन् सुखंसुखी ।

टी०—मदन वृक्षके फूल और फलोंके महीन चूर्ण करके सुन्दर रूचित किये फूल को मंड और रस आदि करके तृप्त हुआ मनुष्य सूंघता हुआ सुख पूर्वक वमन करता है ॥ १८ ॥

एवमेवफलाभावेकल्प्यंपुष्पंशलाटुवा ।
जीमूताद्याश्चफलवत्जीमूतंतुविशेषतः १९
प्रयोक्तव्यंज्वरश्वासकासहिध्मादिरोगिणाम् ।
पयःपुष्पेस्यनिर्वृत्तफलेपेयापयस्कृता ॥ २० ॥

टी० इसी क्रम करके फल के अभाव में मैंनफल का फूल अथवा कच्चा फल कल्पित करना योग्य है और देवताड़-तूंवी- कड़वी तोरई-आदि-भी सब मैंनफल की तरह कल्पित करने योग्य हैं-और विशेष करके देवताड़॥१९

ज्वर श्वास-खांसी हिचकी आदि रोग वालों

के अर्थ प्रयुक्त करना हित है और इस देवताड़ के सम्पन्न हुये फूलों में और फलों में इसी के दूध करके ये बनीहुई हित है ॥२०॥

लोमशंक्षीरसंतानंदध्युत्तरमलोमशे ।
श्रितेपयसिदध्यम्लंजातेहरितपाण्डुके २१

टी० कोमल रूप देवताड़ के फल को दूध में पकावे - जब मलाई उपजे तिस को खावे और कठिन रूप देवताड़ के फल को दूध में पकाय उसका दही जमावे पीछे रस बनाय के पीवे हरित और पांडु रंगके देवताड़ के फल को दूध में पकाय के पीछे उसका दही जमाय के पीवे ॥ २१ ॥

असुत्यवारुणीमण्डंपिवेन्मृदितगालितम्
कफादरोचकेकासेपांडुत्वेराजयक्ष्मणि ।२२।

टी० कफ से उपजे अरोचक में और खांसी

में और पाण्डु रोग में और राजयक्ष्मा में मर्द्दित करके छाने हुए वारुणी मदिरा के मंड को पीवै ॥ २२ ॥

इयंचकल्पनाकार्य्यातुम्बीकोशातकीस्वपि ।
पर्य्यागतानांशुष्काणां फलानां वेणिजन्मनाम् ।

टी॰ यह कल्पना तूम्बी और कड़वी तोरई आदि में भी करने योग्य है और अच्छी तरह प्राप्त पाक वाले और देव दाली से उत्पन्न होनेवाले और शुष्क ऐसे फलों के ॥२३॥

चूर्णस्यपयसासूक्तिंवातपित्तार्दितःपिवेत् ।
द्वेवात्रीण्यपिवाऽऽयोथ्यक्वाथेतिक्तो तमस्यवा

टी॰ चूर्ण को दो तोले भर ले दूध के संग वात और पित्त से पीड़ित हुआ मनुष्य पीवे-अथवा कड़वी तोरई के फलों का चूर्ण कर

पीछे नीव के क्वाथ में मिला के पित्त और कफ ज्वर वाला पीवे ॥ २४ ॥

आरग्वधादिनवकादासुत्यान्यतमस्यवा

विमृद्यपूतंक्वाथंपित्तश्लेष्मज्वरीपिवेत् २५

टी० अथवा आरग्वधादि गण के नव औषधों में से किसी एक के क्वाथ में दो अथवा तीन देवताड़ के फलों को मर्दित करके और छान के पित्त के ज्वर वाला पीवे ॥ २५ ॥

जीमूतचूर्णकल्कंवापिवेच्छीतेनवारिणा।

ज्वरेपित्तेकवोष्णेनकफवातात्कफादपि २६

टी० देवताड़ के फल के चूर्ण को अथवा कल्क को ठण्डे पानी में लोडित करके पित्त ज्वर में पीवे-और उसी के कल्क को अथवा चूर्ण को कफ वात से उपजे तथा कफसे उपजे ज्वर में कछुक गरम पानी के संग पीवे २६

कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्तेकफकर्शिते ।
इक्ष्वाकुर्वमनेशस्तःप्रताम्पतिचमानवे २७

टी० खांसी-श्वास-विष-छर्दि-ज्वर-इन्हों से पीड़ित और कफ से कर्षित और प्रतामित ऐसे मनुष्य को वमन में कड़वी तूंबी श्रेष्ट है।

फलपुष्पविहीनस्यप्रवालैस्तस्यसाधितम् ।
पत्तश्लेष्मज्वरीक्षीरंपित्तोद्रिक्तेप्रयोजयेत् २८

टी० फल और पुष्प करके वर्जित हुई कड़वी तूंबी के अंकुरों करके साधित किया दूध पित्तकी अधिकता वाले पित्त कफ ज्वर में प्रयुक्तकरे २८

द्रतमध्येफलेजीर्णेस्थितंक्षीरंयदादधि ।
स्यात्तदाकफजकासश्वासेवम्यंचपाययेत् २९

टी० जीर्ण हुए ताड़फल के मध्य में से गूदे को निकास तहां स्थित किया दूध जो दही भाव को प्राप्त होवे तिस को कफ की खांसी

और श्वास में वमन के अर्थ पान करावे॥ २९॥

वस्तुनावाफलान्मध्येपाण्डुकुष्टविषार्द्दितः।
तेनतक्रंविपक्वंवापिवेत्समधुसैन्धवम्॥ ३०॥

टी० कड़वी तूंबी के मध्य भाग को-पांडु कुष्ट-विष इन्हों से पीड़ित हुवा मनुष्य दही के पानी के संग घोल के पीवे अथवा कड़वी तूंबी के गूदे के संग पकाया हुआ और शहद तथा सेंधे नमक से संयुक्त किये हुए तक्र को पीवे ॥ ३० ॥

भावयित्वाजदुग्धेनवीजंतेनैववापिवेत्।
विषगुल्मोदरग्रन्थिगंडेषुश्लीपदेषुच ३१

टी० कड़वी तूंबी के बीज को बकरीके दूध में भावित कर पीछे बकरी के दूध के संगपीवे यह योग विष-गुल्मरोग-उदर रोग-ग्रंन्थि-गल गंड-श्लीपद-इन्हों में हित है॥ ३१॥

सक्तुर्वापिवेन्मंथंतुंबीस्वरसभावितैः ।
कफोद्भवेज्वरेकासेगलरोगेष्वरोचके ३२

टी॰ तूंबी के स्वरस करके भावित किये सतुओं करके मन्थको कफसे उत्पन्न हुए ज्वर खांसी गल रोग अरोचक इन रोगों में पीवे ।

गुल्मेज्वरेप्रसक्तेचकल्कंमांसरसैः पिवेत् ।
नरःसाधुवमत्येवंनचदौर्वल्यमश्नुते ३३

टी॰ गुल्म में तथा प्रसक्त अर्थात् पुराने ज्वर में तूंबे के कल्क को मांस के रस के संग पीवे ऐसा करने से मनुष्य अच्छी तरह वमनकरता है और दुवलेपन को नहीं प्राप्तहोता है ३३ ॥

तुम्ब्याःफलरसैःशुष्कैःसपुष्पैरवचूर्णितम् ।
छर्द्दयेन्माल्यमाघ्रायगंधसंपत्सुखोचितः ३४

टी॰ तूंबीके सूखे हुए फलऔर रसों करके तथा तूंबी के पुष्पों करके गंध की संपत्तिवाले

किये चूर्ण को थोड़ा सूंघ कर सुखी मनुष्य अच्छी तरह वमन करता है॥ ३४ ॥

कासेगुल्मोदरगरेवातेश्लेष्माशयस्थिते।
कफेचकंठवक्त्रस्थेकफसञ्चयजेषुच॥ ३५ ॥

टी० खांसी-गुल्मोदर, उदररोग-विष-इन्हों में कफाशय में स्थित हुए वायु में कंठ और मुख में स्थित हुए कफ और कफ के संचय में उपजने वाले अरोचक आदि रोगों के॥ ३५ ॥

धामार्गवोगदेष्विष्टःस्थिरेषुचमहत्सुच।
जीवकर्षभकौवीराकपिकच्छूशतावरी॥ ३६॥

टी० स्थिर और बढे हुए रोगों में कड़वी तोरई का फल वांछित है और जीवक-ऋषभक, ब्राह्मी, कौंच के बीच, शतावरी॥३६॥

काकोलीश्रवणीमेदामहामेदामधूलिका।
तद्रजोभिःपृथग्लेहाधामार्गवरजोन्विताः ३७

टी० काकोली, गोरखमुंडी, मेदा, महामेदा मुलहटी-इन्हों के चूर्णां करके और कड़वी तोरई के चूर्ण से अचित ॥ ३७ ॥

कासेहृदयदाहेचशस्तामधुसितार्द्रिताः
तेसुखाम्भोऽनुपानाःस्युःपित्तोष्मसहितेकफे॥

टी० शहद और मिश्री में अत्यन्त द्रव रूप किये ऐसे पृथक् पृथक् लेह खांसी में और हृदय के दाह में श्रेष्ठ है और पित्त की अग्नि कर के सहित हुए कफ में ये पूर्वोक्त लेह गरमपानी के अनुपान से ग्रहण किये जाते हैं ॥ ३८ ॥

धान्यतुम्बरुयूषेण कल्कस्तस्यविषापहः।
निम्भ्योःपुनर्नवायावा कासमर्दस्यवारसे ३९

टी० धनिये और चिरफल के यूष करके कड़वी तोरई का ग्रहण किया कल्क विषको नाशकरता है और कड़वी तोरई के रसमें अथवा

थांठी के रसमें अथवा कसोंदी के रसमें,॥ ३९॥

एकधामार्गबंद्धोवा मानसेमृदितंपिवेत्

तच्छृतक्षीरजंसर्पिः साधितंवाफलादिभिः ४०

टी० एक अथवा दो कड़वी तोरई के फलों को मर्दित करके मनके विकार में पीवे अथवा मैनफल कड़वी तोरई लालऊंगा कुड़ा इन्हीं करके साधित किये घृत को पीवे ॥ ४० ॥

क्ष्वेडोऽतिकटुतीक्ष्णोष्णः प्रगाढेसुप्रशस्यते ।

कुष्टपाण्ड्वामयप्लीह शोफगुल्मगरादिषु॥

टी० अत्यन्त कड़वी तोरई अतिकटु-तीक्ष्ण गरम-इन्हीं करके अत्यन्त दृढ़रूप कुष्ट पाण्डु प्लीह रोग, शोजा, गुल्म और विष आदि में श्रेष्ट है ॥ ४१ ॥

पृथक्फलादिषट्कस्यक्वाथेमांसमनूपजम् ।

कोशात्तक्यासमंसिद्धंतद्रसंलवणांपिवेत् १२

टी॰ मैनफल, देवताड़, कड़वी तूंबी, लालऊंगा-कड़वी तोरई-कुड़ा-इन छहों के क्वाथ में कड़वी तोरई के समान सिद्ध किया अनूपदेश के मांस के रस को निमक डाल के पीवे॥४२॥

फलादिपिप्पलीतुल्यंसिद्धंक्ष्वेडरसेथवा।
क्ष्वेडक्वाथोपिवेत्सिद्धंमिश्रमिक्षुरसेनवा ४३

टी॰ मैनफल आदि छहों फलों के बीजों के समान अनूरूप देशके मांस के रस को अत्यन्त कड़वी तोरई के रस अथवा ईख के रस में मिश्रित किये अत्यंत कड़वी तोरई के काढे में सिद्ध किये अनूपदेश के मांस के रस को निमक के संग पीवे॥ ४३ ॥

कुटजंसुकुमारेषुपित्तरक्तकफोदये।
ज्वरेविसर्पेहृद्रोगखुडेकुष्टेचपूजितम् ॥४४

टी॰ सुकुमार मनुष्यों में जो अतिशय कर

के पित्त-कफरक्त इन्हों का उदय होने में और ज्वर-विसर्प-हृद्रोग-वातरक्त-कुष्ठ-इन्हों में श्वेत कूड़ा करके वमन लेना पूजित है ॥ ४४

सर्षपाणांमधूकानांतोयेनलवणस्यवा ।
पाययेत् कौटजंवीजंयुक्तंकृशरयाऽथवा ॥४५

टी० सरसों और महुवा के क्वाथ करके अथवा सेंधा नमकके पानी करके अथवा कृशरा करके युक्त इन्द्रजवों का पान करावे ४५

सप्ताहंवार्कदुग्धाक्तंतच्चूर्णंपाययेत्पृथक् ।
फलजीमूतकेक्ष्वाकुजीवन्तीजीवकोदनैः ४६

टी० अथवा सात दिन तक आक के दूध में भीगे हुए इन्द्रजवों के चूर्ण को अलग २ मैनफल-देवताड़फल-कडवी तूंबी, जीवन्ती-जीवक-इन्हों के पानी के संग पान करावे ॥४६॥

वमनौषधमुख्यानामितिकल्पादिगीरताः ।

बीजमानेनमतिमानन्यान्यपितुकल्पयेत् ४७

टी० वमन में प्रधान औषधों के कल्क की इस प्रकार से दशा कही है इसी प्रकार बुद्धिमान् वैद्य वमन के योग्य अन्य भी औषधों को कल्पित करे ॥४७॥

॥ इति वमनकल्पतरु सटीक समाप्तः ॥
